

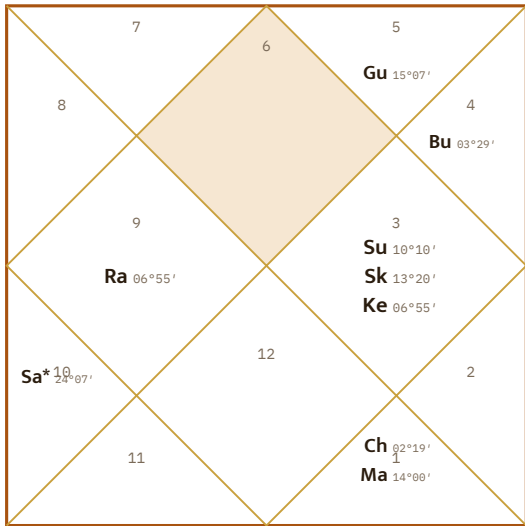
jyotina

PURE CALCULATION. ZERO DAR.

सशुल्क रिपोर्ट · बनी 14 अक्टूबर 2026

संतान रिपोर्ट

नेहा · 25 जून 1992 · 11:40 · लखनऊ, भारत



लग्न: कन्या 03°382

चंद्र राशि: मेष · अश्विनी पद 1

दशा: चंद्र – राहु · 2027 तक

योग: चंद्र-मंगल, विपरीत राज योग, अमला योग

विषय-सूची

01 निचोड़ पहले — जवाब का कार्ड

02 पंचम भाव — संतान का घर

03 सप्तमांश · D-7

04 नवांश · D-9

05 गहरी गवाही — वर्गों से

06 संतान के ग्रह — ताकत का हिसाब

07 अनुकूल समय

08 36 महीने — कौनसा दौर कब

09 गोचर · राशि बदलने की तारीखें

10 निचोड़

11 5 सवाल जो सब पूछते हैं — आपके लिए जवाब

परिशिष्ट · ग्रह स्थिति · निरयण · अष्टकवर्ग · भावों की ताकत · विशोत्तरी दशा · समय-रेखा

हर स्थिति ज्योतिना इंजन से गिनी गई है (लाहिड़ी अयनांश, सत्य राहु, पूर्ण-राशि भाव), उसके बाद एक भी शब्द लिखा गया। एआई आँकड़े पढ़ता है और उनका हवाला देता है; गिनती कभी नहीं करता।
भाषा: हिन्दी.

01 निचोड़ पहले — जवाब का कार्ड

पहले निष्कर्ष; इसके बाद का हर पन्ना उसका प्रमाण है

- ◆ संतान-योग विद्यमान है, क्योंकि पंचम भाव में पंचमेश शनि 24°07' मकर में अपनी राशि में स्थित है; वक्री शनि परिणाम रोकता नहीं, पर देरी और धैर्य की माँग बढ़ाता है।
- ◆ चंद्र से पंचम सिंह में गुरु 15°07' सहायक है, जबकि डी7 के पंचम कर्क में मंगल और केतु होने से प्रक्रिया सहज के बजाय उतार-चढ़ाव वाली रह सकती है।
- ◆ सबसे अनुकूल समय 7 मार्च 2027 – 11 मई 2027 है, जब चंद्र-गुरु-गुरु दशा के साथ फरवरी 2027 – जून 2027 में गोचर गुरु कर्क से जन्मकुंडली के पंचम भाव को देखता है।
- ◆ इसके बाद 2 नवंबर 2027 – 22 जनवरी 2028 और 11 मई 2027 – 27 जुलाई 2027 उपयोगी अवसर हैं, लेकिन दिसंबर 2026 – मई 2028 में पंचम भाव से राहु का गोचर अपेक्षाओं और निर्णयों में अस्थिरता ला सकता है।

सबसे अच्छे दौर

7 मार्च 2027 – 11 मई 2027

7 मार्च 2027 – 11 मई 2027

सर्वोत्तम प्रयास-काल: चंद्र-गुरु-गुरु और फरवरी 2027 – जून 2027 में कर्क स्थित गुरु की पंचम भाव पर दृष्टि।

2 नवंबर 2027 – 22 जनवरी 2028

2 नवंबर 2027 – 22 जनवरी 2028

चंद्र-गुरु-शुक्र का सहायक काल; नवंबर 2027 में गुरु चंद्र से पंचम और दिसंबर 2027 – फरवरी 2028 में लग्न से पंचम भाव को देखता है।

11 मई 2027 – 27 जुलाई 2027

11 मई 2027 – 27 जुलाई 2027

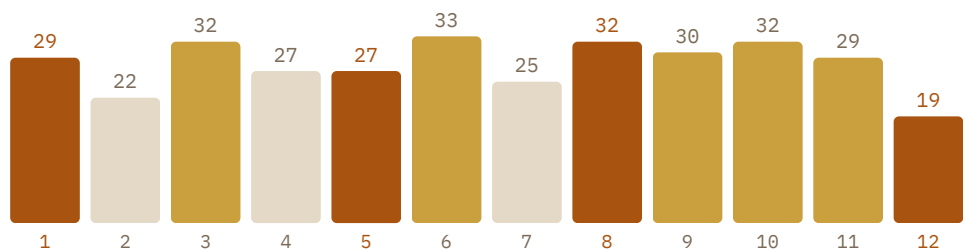
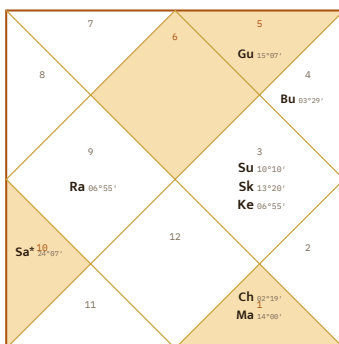
चंद्र-गुरु-शनि में संतान-कारक गुरु की अंतर्दशा और पंचमेश शनि की प्रत्यंतर दशा सक्रिय रहती है; फरवरी 2027 – जून 2027 का गुरु-गोचर अतिरिक्त सहारा देता है।

एक सावधानी

दिसंबर 2026 – मई 2028 में राहु मकर के पंचम भाव में रहेगा; जन्मकुंडली में पंचमेश शनि भी वक्री है, इसलिए चिंता, जल्दबाजी और केवल अनुमान पर आधारित निर्णयों से सावधानी रखनी चाहिए।

भरोसा मध्यम · विश्वास स्तर मध्यम है। जन्म-समय उपलब्ध है और डी1 में पंचमेश मजबूत है, लेकिन डी7 के पंचम में मंगल-केतु मिश्रित संकेत देते हैं, गोचर केवल मासिक स्तर पर हैं और साथी की कुंडली उपलब्ध नहीं है।

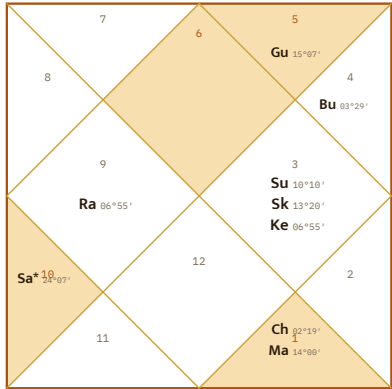
एक नज़र में



भाव-वार सर्वाष्टकवर्ग बिंदु · 28 और ऊपर मजबूत, 25 से नीचे कमज़ोर · रंगी पट्टियाँ इस रिपोर्ट के भाव हैं

02 पंचम भाव — संतान का घर

भाव 5 · 12 · 8 · 1

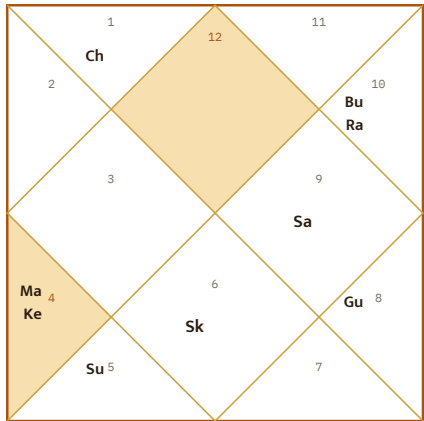


स्थिति	यहाँ क्या करती है	वज़न
शनि 24°07' मकर · भाव 5 · स्वराशि · वक्री	पंचमेश का अपने ही पंचम भाव में होना संतान का ठोस योग देता है, जबकि वक्री गति विलंब या बार-बार पुनर्विचार करा सकती है।	प्रबल
गुरु 15°07' सिंह · भाव 12 · सामान्य स्थिति	गुरु लग्न से द्वादश में होने के कारण प्रत्यक्ष समर्थन मध्यम है, पर चंद्र से पंचम में स्थित होकर संतान-विषय को संरक्षण देता है।	मध्यम
पंचम भाव · मकर · 27 बिंदु	पंचम भाव के 27 बिंदु न बहुत मजबूत हैं न कमजोर, इसलिए फल संभव है, पर विशेष सहजता का संकेत नहीं मिलता।	मध्यम
चंद्र 02°19' मेष · भाव 8 · सामान्य स्थिति	चंद्र का अष्टम भाव में होना संतान-विषय को भावनात्मक चिंता, गोपनीयता या अचानक बदलती परिस्थितियों से जोड़ सकता है।	हल्का

पंचम भाव संतान का मुख्य भाव है। इसका स्वामी शनि 24°07' मकर में इसी भाव में अपनी राशि में बैठा है। इससे संतान का मूल वादा मजबूत और स्थायी बनता है। शनि वक्री है, इसलिए फल सीधा और जल्दी मिलने के बजाय समय, अनुशासन और बार-बार सोच-विचार के बाद खुलता है। यह योग संतान को नकारता नहीं, बल्कि धैर्य की परीक्षा लेता है।

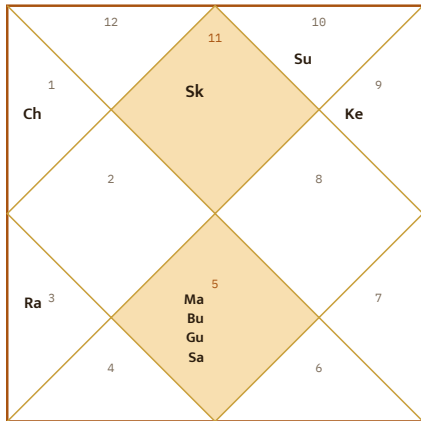
गुरु 15°07' सिंह में लग्न से द्वादश भाव में है, इसलिए उसकी सीधी मदद मध्यम रहती है। फिर भी चंद्र से पंचम होने के कारण वह संतान-विषय को सुरक्षा और सकारात्मक पुष्टि देता है। पंचम भाव के 27 अष्टकवर्ग बिंदु औसत बल दिखाते हैं; फल संभव है, पर विशेष सहजता नहीं। अष्टम भाव का चंद्र भावनात्मक चिंता, गोपनीयता या अचानक बदलती परिस्थितियाँ ला सकता है। कुल मिलाकर कुंडली में संतान-योग है, पर उसका फल व्यवस्थित प्रयास और स्थिर मन से बेहतर खुलता है।

03 सप्तमांश · D-7



ग्रह	D7 राशि	भाव
लग्न	मीन	1
सूर्य	सिंह	6
चंद्र	मेष	2
मंगल	कर्क	5
बुध	मकर	11
गुरु	वृश्चिक	9
शुक्र	कन्या	7
शनि	धनु	10
राहु	मकर	11
केतु	कर्क	5

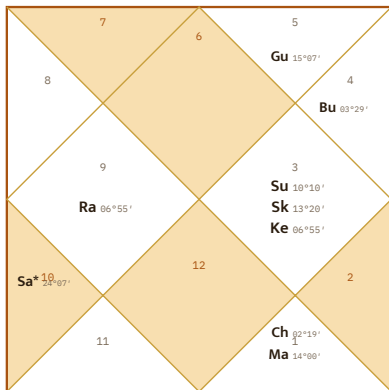
04 नवांश · D-9



ग्रह	D9 राशि	भाव
लग्न	कुम्भ	1
सूर्य	मकर	12
चंद्र	मेष	3
मंगल	सिंह	7
बुध	सिंह	7
गुरु	सिंह	7
शुक्र	कुम्भ	1
शनि	सिंह	7
राहु	मिथुन	5
केतु	धनु	11

05 गहरी गवाही — वर्गों से

भाव 1 · 5 · 9 · 2 · 7



स्थिति	यहाँ क्या करती है	वज़न
डी7 लग्न मीन · पंचम कर्क · मंगल-केतु	डी7 के पंचम में मंगल और केतु संतान-विषय को संवेदनशील तथा अनियमित बना सकते हैं, इसलिए धैर्यपूर्ण योजना महत्वपूर्ण रहती है।	प्रबल
डी7 गुरु वृश्चिक · भाव 9 · पंचम कर्क पर दृष्टि	डी7 का गुरु पंचम कर्क को अपनी नवम दृष्टि से देखकर कठिन संकेतों को आंशिक संरक्षण देता है।	प्रबल
डी7 पंचमेश चंद्र · मेष · भाव 2	डी7 पंचमेश चंद्र का द्वितीय भाव में होना संतान को परिवार-वृद्धि के विषय से सीधे जोड़ता है।	मध्यम
डी1 पंचमेश शनि · डी9 सिंह · भाव 7	मूल पंचमेश का डी9 सप्तम भाव में होना समय और परिणाम को दांपत्य समन्वय तथा संयुक्त निर्णयों पर निर्भर बनाता है।	मध्यम
चंद्र से पंचम सिंह · गुरु स्थित	चंद्र से पंचम में गुरु होना डी1 के विलंबकारी संकेतों के विरुद्ध एक स्पष्ट सकारात्मक दूसरी पुष्टि है।	प्रबल

सप्तमांश, यानी संतान का सूक्ष्म वर्ग-चित्र, मूल कुंडली के संकेतों को और साफ करता है। डी7 में मीन लग्न और पंचम भाव कर्क है, जहाँ मंगल और केतु साथ हैं। इससे संतान-विषय में प्रयास, अधीरता, रुकावट या असमान गति का संकेत मिलता है। यह योग संतान की संभावना को खत्म नहीं करता, लेकिन प्रक्रिया को सीधी रेखा जैसा नहीं रहने देता। इसलिए शांत योजना और लगातार संवाद जरूरी रहते हैं।

डी7 का गुरु वृश्चिक में नवम भाव से पंचम कर्क पर अपनी नवम दृष्टि डालता है। यह कठिन संकेतों को संरक्षण और सुधार का सहारा देता है। डी7 पंचमेश चंद्र मेष के द्वितीय भाव में है, इसलिए संतान का संबंध परिवार बढ़ने और घर की स्थिरता से सीधे जुड़ता है। डी9 में मूल पंचमेश शनि सिंह के सप्तम भाव में है, जिससे समय और परिणाम दांपत्य समझ, साझा निर्णय और दोनों की सहमति से जुड़े रहते हैं। चंद्र से पंचम गुरु की स्थिति मूल कुंडली के सकारात्मक पक्ष की दूसरी स्पष्ट पुष्टि है।

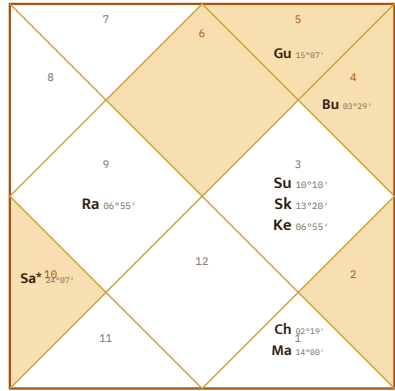
06 संतान के ग्रह — ताकत का हिसाब

ग्रह	राशि · भाव	अंश	स्थिति	ताकत
गुरु	सिंह · भाव 12	15°07'56.1"	सामान्य	
चंद्र	मेष · भाव 8	2°19'13.5"	सामान्य	
शुक्र	मिथुन · भाव 10	13°20'55.5"	सामान्य · अस्त	
मंगल	मेष · भाव 8	14°00'04.2"	स्वराशि	
सूर्य	मिथुन · भाव 10	10°10'31.4"	सामान्य · दिग्बल	

पट्टी = बल + दिग्बल – अस्त, 0 से 4 · लिखा हुआ विवरण इससे ज़्यादा मायने रखता है

07 अनुकूल समय

भाव 5 · 12 · 11 · 1 · 9



स्थिति	यहाँ क्या करती है	वज़न
चंद्र-गुरु-गुरु · 7 मार्च 2027 – 11 मई 2027	संतान-कारक गुरु की अंतर्दशा और प्रत्यंतर दशा एक साथ सक्रिय होने से यह सबसे केंद्रित अवसर है।	प्रबल
गुरु कर्क · भाव 11 · फरवरी 2027 – जून 2027	कर्क से गुरु की सप्तम दृष्टि मकर के जन्मकालीन पंचम भाव और उसमें स्थित पंचमेश शनि को सक्रिय करती है।	प्रबल
चंद्र-गुरु-शनि · 11 मई 2027 – 27 जुलाई 2027	गुरु की अंतर्दशा में जन्मकुंडली के पंचमेश शनि की प्रत्यंतर दशा संतान-विषय को प्रत्यक्ष रूप से सक्रिय करती है।	प्रबल
चंद्र-गुरु-शुक्र · 2 नवंबर 2027 – 22 जनवरी 2028	गुरु की अंतर्दशा और शुक्र की प्रत्यंतर दशा सहायक है तथा इस अवधि में गुरु पहले चंद्र से पंचम और फिर लग्न से पंचम को प्रभावित करता है।	मध्यम
राहु मकर · भाव 5 · दिसंबर 2026 – मई 2028	पंचमस्थ राहु अवसरों को नकारता नहीं, लेकिन अपेक्षा, समय-निर्धारण और निर्णयों में भ्रम या उतावलापन बढ़ा सकता है।	मध्यम

सबसे मजबूत समय 7 मार्च 2027 – 11 मई 2027 है। इस दौरान चंद्र-गुरु-गुरु दशा चलती है, इसलिए संतान-कारक गुरु की अंतर्दशा और प्रत्यंतर दशा एक साथ सक्रिय रहती हैं। साथ ही फरवरी 2027 – जून 2027 में गोचर गुरु कर्क में रहकर अपनी सप्तम दृष्टि से जन्मकुंडली के मकर पंचम भाव और वहाँ बैठे पंचमेश शनि को सक्रिय करता है। दशा और गोचर का यह मेल इस समय को सबसे केंद्रित अवसर बनाता है।

11 मई 2027 – 27 जुलाई 2027 में चंद्र-गुरु-शनि सक्रिय रहेगा। गुरु की अंतर्दशा के साथ पंचमेश शनि की प्रत्यंतर दशा संतान-विषय को सीधे खोलती है। 2 नवंबर 2027 – 22 जनवरी 2028 में चंद्र-गुरु-शुक्र दूसरा प्रमुख सहायक समय देता है; इस दौर में गुरु पहले चंद्र से पंचम और फिर लग्न से पंचम को प्रभावित करता है। दिसंबर 2026 – मई 2028 का पंचमस्थ राहु अवसर मिटाता नहीं, पर निर्णय, अपेक्षा और समय-निर्धारण में भ्रम बढ़ा सकता है।

08 36 महीने — कौनसा दौर कब

अक्टूबर 2026 चंद्र-राहु-शुक्र शुक्र से शुरुआती सहयोग	नवंबर 2026 चंद्र-राहु-शुक्र शुक्र से शुरुआती सहयोग	दिसंबर 2026 चंद्र-राहु-सूर्य स्थिर योजना बेहतर	जनवरी 2027 चंद्र-राहु-चंद्र भावनात्मक उतार-चढ़ाव	फ़रवरी 2027 चंद्र-राहु-मंगल जल्दबाजी से बचें	मार्च 2027 चंद्र-गुरु-गुरु गुरु का सर्वोत्तम अवसर
--	--	--	--	--	---

अप्रैल 2027 चंद्र-गुरु-गुरु गुरु का सर्वोत्तम अवसर	मई 2027 चंद्र-गुरु-शनि पंचमेश का सक्रिय सहयोग	जून 2027 चंद्र-गुरु-शनि पंचमेश का सक्रिय सहयोग	जुलाई 2027 चंद्र-गुरु-शनि पंचमेश का सक्रिय सहयोग	अगस्त 2027 चंद्र-गुरु-बुध योजना और संवाद	सितंबर 2027 चंद्र-गुरु-बुध योजना और संवाद
अक्टूबर 2027 चंद्र-गुरु-केतु अनिश्चितता अधिक	नवंबर 2027 चंद्र-गुरु-शुक्र दूसरा प्रमुख अवसर	दिसंबर 2027 चंद्र-गुरु-शुक्र दूसरा प्रमुख अवसर	जनवरी 2028 चंद्र-गुरु-शुक्र दूसरा प्रमुख अवसर	फरवरी 2028 चंद्र-गुरु-सूर्य/चंद्र निर्णय स्पष्ट रखें	मार्च 2028 चंद्र-गुरु-चंद्र धैर्यपूर्ण निरंतरता
अप्रैल 2028 चंद्र-गुरु-मंगल अधीरता नियंत्रित रखें	मई 2028 चंद्र-गुरु-राहु राहु से भ्रम	जून 2028 चंद्र-गुरु-राहु राहु से भ्रम	जुलाई 2028 चंद्र-शनि-शनि धीमी स्थिर प्रगति	अगस्त 2028 चंद्र-शनि-शनि धीमी स्थिर प्रगति	सितंबर 2028 चंद्र-शनि-शनि धीमी स्थिर प्रगति
अक्टूबर 2028 चंद्र-शनि-बुध व्यावहारिक समन्वय	नवंबर 2028 चंद्र-शनि-बुध व्यावहारिक समन्वय	दिसंबर 2028 चंद्र-शनि-बुध व्यावहारिक समन्वय	जनवरी 2029 चंद्र-शनि-केतु विराम और पुनर्विचार	फरवरी 2029 चंद्र-शनि-शुक्र शुक्र से सहयोग	मार्च 2029 चंद्र-शनि-शुक्र शुक्र से सहयोग
अप्रैल 2029 चंद्र-शनि-शुक्र शुक्र से सहयोग	मई 2029 चंद्र-शनि-सूर्य स्पष्ट निर्णय जरूरी	जून 2029 चंद्र-शनि-चंद्र भावनात्मक संतुलन रखें	जुलाई 2029 चंद्र-शनि-चंद्र भावनात्मक संतुलन रखें	अगस्त 2029 चंद्र-शनि-मंगल जल्दबाजी से बचाव	सितंबर 2029 चंद्र-शनि-राहु परिस्थितियों में बदलाव

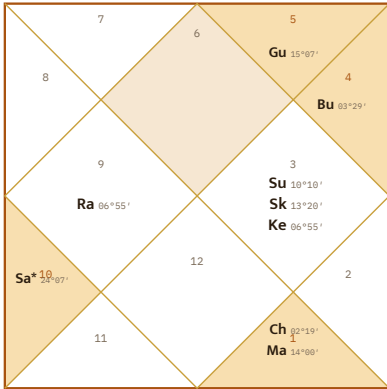
■ बढ़त
 ■ दबाव
 ■ स्थिर
 ■ बदलाव
 · खाना = महादशा · अंतर्दशा · प्रत्यंतर

09 गोचर · राशि बदलने की तारीखें

ग्रह	राशि	लग्न से	चंद्र से	अवधि
शनि	मीन	भाव 7	भाव 12	अक्टूबर 2026 – जून 2027
शनि	मेष	भाव 8	भाव 1	जुलाई 2027 – अक्टूबर 2027
शनि	मीन	भाव 7	भाव 12	नवंबर 2027 – फ़रवरी 2028
शनि	मेष	भाव 8	भाव 1	मार्च 2028 – अगस्त 2029
शनि	वृषभ	भाव 9	भाव 2	सितंबर 2029 – अक्टूबर 2029
गुरु	कर्क	भाव 11	भाव 4	अक्टूबर 2026 – अक्टूबर 2026
गुरु	सिंह	भाव 12	भाव 5	नवंबर 2026 – जनवरी 2027
गुरु	कर्क	भाव 11	भाव 4	फ़रवरी 2027 – जून 2027
गुरु	सिंह	भाव 12	भाव 5	जुलाई 2027 – नवंबर 2027
गुरु	कन्या	भाव 1	भाव 6	दिसंबर 2027 – फ़रवरी 2028
गुरु	सिंह	भाव 12	भाव 5	मार्च 2028 – जुलाई 2028
गुरु	कन्या	भाव 1	भाव 6	अगस्त 2028 – दिसंबर 2028
गुरु	तुला	भाव 2	भाव 7	जनवरी 2029 – मार्च 2029
गुरु	कन्या	भाव 1	भाव 6	अप्रैल 2029 – अगस्त 2029
गुरु	तुला	भाव 2	भाव 7	सितंबर 2029 – अक्टूबर 2029
राहु	कुम्भ	भाव 6	भाव 11	अक्टूबर 2026 – नवंबर 2026
राहु	मकर	भाव 5	भाव 10	दिसंबर 2026 – मई 2028
राहु	धनु	भाव 4	भाव 9	जून 2028 – अक्टूबर 2029
केतु	सिंह	भाव 12	भाव 5	अक्टूबर 2026 – नवंबर 2026
केतु	कर्क	भाव 11	भाव 4	दिसंबर 2026 – मई 2028
केतु	मिथुन	भाव 10	भाव 3	जून 2028 – अक्टूबर 2029

10 निचोड़

भाव 5 · 8 · 12 · 11



स्थिति	यहाँ क्या करती है	वज़न
शनि 24°07' मकर · भाव 5 · स्वराशि · वक्री	यह संतान का स्थायी मूल वादा देता है, लेकिन समय लगने की संभावना बढ़ाता है।	प्रबल
चंद्र से पंचम सिंह · गुरु स्थित	चंद्र से पंचम गुरु सकारात्मक फल और अंततः समर्थन की पुष्टि करता है।	प्रबल
डी7 पंचम कर्क · मंगल-केतु	डी7 का मिश्रित पंचम सरल या सीधी प्रगति के बजाय उतार-चढ़ाव का संकेत देता है।	मध्यम
गुरु कर्क · भाव 11 · फरवरी 2027 – जून 2027	यह गोचर पंचम भाव को देखकर 7 मार्च 2027 – 11 मई 2027 के दशा-संयोग को मजबूत करता है।	प्रबल

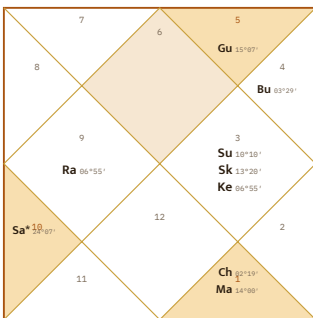
कुंडली में संतान का योग साफ तौर पर विद्यमान है। पंचमेश शनि का मकर के पंचम भाव में अपनी राशि में होना इस योग को स्थायी आधार देता है। उसकी वक्री अवस्था परिणाम में देरी, दोबारा प्रयास या लंबे धैर्य की जरूरत दिखाती है। डी7 के पंचम में मंगल-केतु प्रक्रिया को उतार-चढ़ाव वाला बनाते हैं, लेकिन यह संतान-योग को खत्म करने वाला संकेत नहीं है। चंद्र से पंचम गुरु सकारात्मक परिणाम की दूसरी पुष्टि देता है।

सबसे स्पष्ट अनुकूल समय 7 मार्च 2027 – 11 मई 2027 है, जब चंद्र-गुरु-गुरु दशा और फरवरी 2027 – जून 2027 का कर्क स्थित गुरु एक साथ पंचम भाव को सहारा देते हैं। 11 मई 2027 – 27 जुलाई 2027 और 2 नवंबर 2027 – 22 जनवरी 2028 भी उपयोगी अवसर हैं। दिसंबर 2026 – मई 2028 का राहु चिंता और अस्थिरता बढ़ा सकता है। साथी की कुंडली उपलब्ध न होने से संयुक्त निष्कर्ष सीमित हैं; इसलिए शांत योजना, आपसी संवाद और योग्य मार्गदर्शन को प्राथमिकता दें।

11 पाँच सवाल जो सब पूछते हैं

इस विषय पर लोग जो पूछते हैं, हर एक का जवाब आपकी कुंडली से

1. मेरी कुंडली में संतान का योग है?

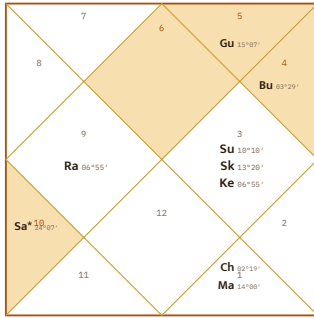


स्थिति	यहाँ क्या करती है	वज़न
शनि 24°07' मकर · भाव 5 · स्वराशि · वक्री	स्वराशि पंचमेश संतान का मूल योग मजबूत करता है, यद्यपि वक्री अवस्था देरी दे सकती है।	प्रबल
चंद्र से पंचम सिंह · गुरु स्थित	चंद्र से पंचम गुरु संतान के सकारात्मक परिणाम की दूसरी पुष्टि करता है।	प्रबल
डी7 पंचम कर्क · मंगल-केतु	यह योग को नकारता नहीं, लेकिन प्रक्रिया में उतार-चढ़ाव और अतिरिक्त धैर्य दिखाता है।	मध्यम

हाँ, आपकी कुंडली में संतान का योग है। पंचमेश शनि 24°07' मकर के पंचम भाव में अपनी राशि में स्थित है, इसलिए संतान का मूल वादा मजबूत है। शनि वक्री होने से फल में देरी, दोबारा प्रयास या लंबे धैर्य की जरूरत आ सकती है।

चंद्र से पंचम सिंह में गुरु सकारात्मक परिणाम की दूसरी पुष्टि देता है। डी7 के पंचम कर्क में मंगल-केतु होने से प्रक्रिया बिल्कुल सहज नहीं रहेगी और बीच-बीच में उतार-चढ़ाव या रुकावट दिख सकती है। फिर भी ये संकेत योग को समाप्त नहीं करते। कुल निष्कर्ष यही है कि संतान की संभावना मौजूद है, पर फल व्यवस्थित प्रयास, शांत मन और निरंतरता से बेहतर खुलता है।

2. सबसे अनुकूल समय कब है?

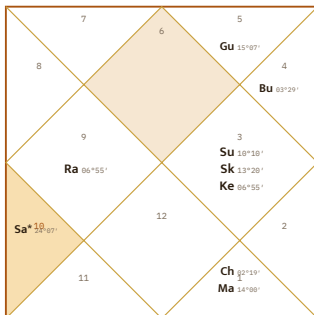


स्थिति	यहाँ क्या करती है	वज़न
चंद्र-गुरु-गुरु · 7 मार्च 2027 – 11 मई 2027	गुरु की दोहरी सक्रियता इसे प्रमुख संतान-अवसर बनाती है।	प्रबल
गुरु कर्क · भाव 11 · फरवरी 2027 – जून 2027	गोचर गुरु अपनी सप्तम दृष्टि से जन्मकालीन पंचम भाव को सक्रिय करता है।	प्रबल
चंद्र-गुरु-शुक्र · 2 नवंबर 2027 – 22 जनवरी 2028	यह दूसरा प्रमुख सहायक अवसर है, विशेषकर गुरु के पंचम-संबंधी गोचर के कारण।	मध्यम

सबसे अनुकूल समय 7 मार्च 2027 – 11 मई 2027 है। इस दौरान चंद्र-गुरु-गुरु दशा सक्रिय रहती है, इसलिए संतान-कारक गुरु की दोहरी सक्रियता अवसर को केंद्रित बनाती है। साथ ही फरवरी 2027 – जून 2027 में कर्क का गोचर गुरु अपनी सप्तम दृष्टि से जन्मकालीन मकर पंचम भाव को देखता है।

दशा और गोचर का यह मेल इस समय को सबसे मजबूत बनाता है। इसके बाद 2 नवंबर 2027 – 22 जनवरी 2028 दूसरा सहायक समय है, जब चंद्र-गुरु-शुक्र चलता है और गुरु पंचम-संबंधी समर्थन देता है। 11 मई 2027 – 27 जुलाई 2027 भी उपयोगी है, क्योंकि उसमें पंचमेश शनि की प्रत्यंतर दशा सक्रिय रहती है।

3. अगर देरी हो रही है, तो उसके पीछे क्या है?

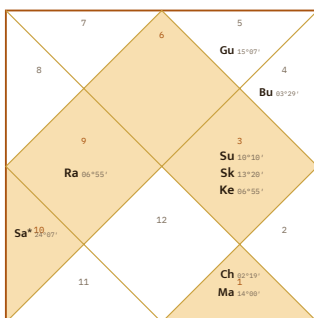


स्थिति	यहाँ क्या करती है	वज़न
शनि 24°07' मकर · भाव 5 · स्वराशि · वक्री	शनि फल को स्थिर रखता है, लेकिन वक्री अवस्था प्रक्रिया को धीमा या दोहराव वाला बना सकती है।	प्रबल
डी7 पंचम कर्क · मंगल-केतु	मंगल-केतु का संयोग अधीरता, रुकावट या असमान प्रगति का संकेत देता है।	मध्यम
राहु मकर · भाव 5 · दिसंबर 2026 – मई 2028	पंचमस्थ राहु अपेक्षाओं और निर्णयों में भ्रम बढ़ाकर देरी का अनुभव तीखा कर सकता है।	मध्यम

देरी का मुख्य कारण पंचम भाव में स्थित वक्री शनि है। वह अपनी राशि में होने से संतान का योग बनाए रखता है, लेकिन फल को धीरे खोलता है और प्रक्रिया में पुनरावृत्ति या प्रतीक्षा ला सकता है। डी7 के पंचम कर्क में मंगल-केतु अधीरता, रुकावट और असमान प्रगति का संकेत देते हैं।

दिसंबर 2026 – मई 2028 में राहु का पंचम गोचर इस अनुभव को और उलझा सकता है। इससे अपेक्षाएँ बढ़ना, समय को लेकर भ्रम या बार-बार निर्णय बदलना संभव है। फिर भी इन संकेतों को योग-भंग नहीं माना जा सकता, क्योंकि पंचमेश मजबूत है और चंद्र से पंचम गुरु संरक्षण देता है। धैर्य, साफ संवाद और स्थिर योजना इस अवधि में सबसे जरूरी रहेंगे।

4. क्या कोई उपाय ज़रूरी है, और कौनसा?

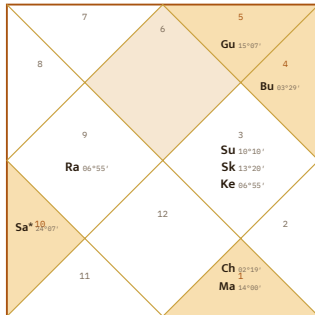


स्थिति	यहाँ क्या करती है	वज़न
मंगल दोष · उपस्थित नहीं · भाव 1, 8	मंगल दोष अनुपस्थित होने से उसके नाम पर विशेष शांति को अनिवार्य नहीं माना जा सकता।	मध्यम
कालसर्प दोष · उपस्थित नहीं · भाव 4, 10	कालसर्प दोष अनुपस्थित होने से भय-आधारित अनुष्ठान का आधार नहीं बनता।	मध्यम
शनि 24°07' मकर · भाव 5 · स्वराशि · वक्री	शनि के लिए व्यावहारिक अनुशासन, धैर्य और निरंतरता कुंडली-संगत प्राथमिकता है।	प्रबल

इस डेटा के आधार पर किसी अनिवार्य या डर पर आधारित उपाय की जरूरत स्थापित नहीं होती। मंगल दोष अनुपस्थित है, इसलिए उसके नाम पर विशेष शांति को जरूरी नहीं माना जा सकता। कालसर्प दोष भी अनुपस्थित है, इसलिए भय पैदा करने वाले अनुष्ठान का आधार नहीं बनता।

आपके लिए सबसे उचित उपाय व्यावहारिक है: नियमित दिनचर्या, धैर्य, जिम्मेदार योजना और योग्य मार्गदर्शन। पंचम भाव में अपनी राशि का वक्री शनि यही सिखाता है कि जल्दबाजी के बजाय लगातार और संतुलित प्रयास रखें। किसी खास मंत्र या अनुष्ठान का आधार उपलब्ध जानकारी में नहीं दिया गया है। स्वास्थ्य से जुड़े किसी भी प्रश्न में योग्य चिकित्सकीय सलाह को प्राथमिकता दें।

5. अगले दो साल में क्या ध्यान रखें?



स्थिति	यहाँ क्या करती है	वज़न
गुरु का सहयोग · 7 मार्च 2027 – 11 मई 2027	यह दशा और गोचर के संयुक्त समर्थन वाला सबसे उपयोगी प्रयास-काल है।	प्रबल
राहु मकर · भाव 5 · दिसंबर 2026 – मई 2028	निर्णयों को तथ्य, संवाद और धैर्य पर रखें क्योंकि राहु अनिश्चितता बढ़ा सकता है।	मध्यम
शनि मेष · भाव 8 · मार्च 2028 – अगस्त 2029	इस गोचर में दबाव बढ़ सकता है, इसलिए निरंतरता रखें और कठिन अवधि को अंतिम निष्कर्ष न मानें।	मध्यम

अगले समय में 7 मार्च 2027 – 11 मई 2027 और 2 नवंबर 2027 – 22 जनवरी 2028 को योजनाबद्ध प्रयास और जरूरी मार्गदर्शन के लिए प्राथमिकता दें। पहले समय में दशा और गुरु-गोचर का संयुक्त सहारा है, जबकि दूसरा समय भी गुरु और शुक्र के कारण उपयोगी है।

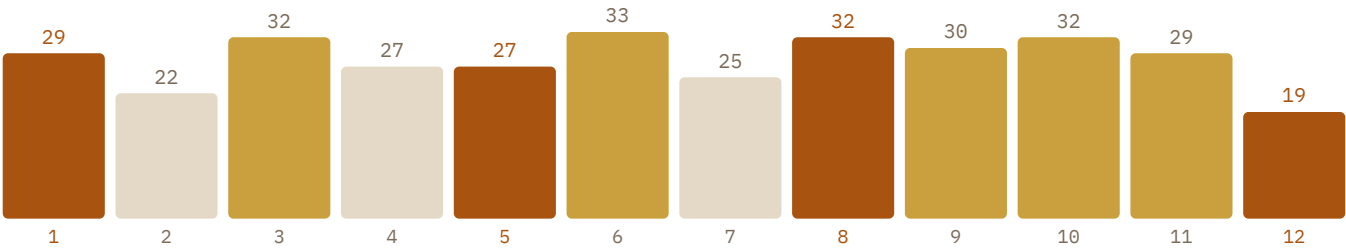
दिसंबर 2026 – मई 2028 में पंचमस्थ राहु के कारण निर्णय तथ्यों, आपसी संवाद और धैर्य पर रखें। मार्च 2028 – अगस्त 2029 में अष्टमस्थ शनि दबाव बढ़ा सकता है; उस दौर को अंतिम निष्कर्ष न मानें और बार-बार दिशा बदलने से बचें। पूरी अवधि में चिंता या जल्दबाजी के बजाय स्थिर योजना, स्पष्ट बातचीत और निरंतरता बनाए रखना आपके लिए बेहतर रहेगा।

परिशिष्ट · आँकड़े

12 ग्रह स्थिति · निरयण

ग्रह	राशि	अंश	नक्षत्र	भाव	बल	गति
सूर्य	मिथुन	10°10 '	आर्द्रा पद 2	10	सामान्य	D
चंद्र	मेष	02°19 '	अश्विनी पद 1	8	सामान्य	D
मंगल	मेष	14°00 '	भरणी पद 1	8	स्वराशि	D
बुध	कर्क	03°29 '	पुष्य पद 1	11	सामान्य	D
गुरु	सिंह	15°07 '	पूर्व फाल्गुनी पद 1	12	सामान्य	D
शुक्र	मिथुन	13°20 '	आर्द्रा पद 3	10	सामान्य · अस्त	D
शनि	मकर	24°07 '	धनिष्ठा पद 1	5	स्वराशि	R
राहु	धनु	06°55 '	मूल पद 3	4	—	Rt
केतु	मिथुन	06°55 '	आर्द्रा पद 1	10	—	Rt

13 अष्टकवर्ग · भावों की ताकत



भाव-वार सर्वाष्टकवर्ग बिंदु · 28 और ऊपर मजबूत, 25 से नीचे कमजोर · रंगी पट्टियाँ इस रिपोर्ट के भाव हैं

14 विंशोत्तरी दशा · समय-रेखा

महादशा	वर्ष	
केतु	1991 - 1998	जन्म पर शेष · 5 वर्ष 9 माह
शुक्र	1998 - 2018	20 वर्ष
सूर्य	2018 - 2024	6 वर्ष
चंद्र	2024 - 2034	10 वर्ष · अंतर्दशा राहु 2027 तक
मंगल	2034 - 2041	7 वर्ष
राहु	2041 - 2059	18 वर्ष
गुरु	2059 - 2075	16 वर्ष
शनि	2075 - 2094	19 वर्ष
बुध	2094 - 2111	17 वर्ष

ayanamsa lahiri · true node · whole sign · engine v0.1.0 · analysis gpt-5.6-sol · prose gpt-5.6-luna · हर हवाला गिनी हुई कुंडली से जाँचा गया